दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-HL10

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Anupam Irkhar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10 / 16/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: | 0 | 0 | 9 | 5 | 5 | 3 | 7 |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 137

टिप्पणी (Remarks): (अधिकांश उत्तर अच्छे हैं) कुछ उत्तरों को थोड़ा और बेहतर बनाने का प्रयास करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान॥

संदर्भ-प्रसंग:- यह दोहा श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत है। कबीर अनभै साँचा के कवि हैं। यह 'विरह को अंग' से लिया गया है।
यहाँ पर कबीर विरह का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या:- संत कबीर कह रहे हैं कि जिस को विरह कहा जाता है वही सुल्तान है जिस हृदय में विरह का संचार नहीं वह हृदय कब्रिस्तान के समान है।
भावार्थ यह है कि विरह सर्वश्रेष्ठ भाव है यह प्रेम की कसौटी है। यहाँ पर कबीर अपने निर्गुण ब्रह्म के प्रति विरह दिखा रहे हैं।

विशेष:-

1) सूफी दर्शन भी विरह को महत्वपूर्ण अवस्था मानता है ब मिलने से पहले की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) दोहा छंद का प्रयोग है जो मात्रिक छंद

3) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग जिसमें खड़ी बोली के आंशिक प्रमाण हैं।

आज के परिप्रेक्ष्य में प्रेम की कसौटी विरह नहीं रह गई। दैहिक प्रेम के अलावा इस तरह का प्रेम आज भी प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'गागर में सागर' भरने वाले बिहारी की सतसई जो जगन्नाथदास रत्नाकर द्वारा संकलित है उससे उद्धृत हैं।

यहाँ पर प्रेम के भँवर में तार होने का अनुभव व्यक्त किया गया है।

व्याख्या:- बिहारी रीतिकाल में कवित रस, राग तथा रंगों का वर्णन कर रहे हैं। वे कह रहे हैं कि जो भी इसमें डूबता है वो पार हो जाता है। जो इसमें नहीं डूबता वह डूब जाता है।

भावार्थ रीतिकालीन मानसिकता को समेटता है। रीति में रत होने ही सार्थक है।

विशेष:-
1) बिहारी ने रीतिकालीन दरबारी रंग दिखाया है।
2) दोहा छंद, मात्र 48 मात्राओं के छंद में बिहारी ने रस, कवित, राग समेट लिया है।
3) ब्रजभाषा की चांचल्य व उतार--चढ़ाव दृष्टिगोचर

5½/10
थोड़ा और बेहतर बनाएँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ-प्रसंग:- 'प्रेम की पीर' के कवि मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' से उद्धृत यह गद्यांश, पं. श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित है। यहाँ पर बारहमासा वर्णन के अन्तर्गत भाद्रपद मास का वर्णन किया गया है। (नागमती वियोग खण्ड)

व्याख्या:- नागमती के लिए भाद्रपद माह और पीड़ादायक है। यहाँ विरह नाग की भाँति नागमती को डस रहा है। यह वर्षा उसके लिए अंधकारमयी है। वह अकेली व्याकुल है तथा उसके नयन मृतप्राय: हैं व हृदय फटता जा रहा है।

बिजलियाँ चमक रही हैं तथा यह उसे काल का ग्रास लग रही हैं। प्रकृति का प्रयोग करके उसके आँसुओं को मेघ वर्षा की उपमा दी गई है। भूमि पूर्व + नक्षत्र लग जाने से जल गई है। यह उसके लिए पीड़ादायक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष -

1) प्रकृति का प्रयोग उद्दीपन विभाव के रूप में

2) 'पुहुमि' - भूमि के लिए - लोकभाषा के प्रयोग को दर्शाता है।

3) प्रकृति का चित्रण विरह के लिए यहाँ भी -
"फिर फिर रोई कोई नहीं डोला ~~आधी~~ आधी रात विहंगम बोला"

4) कड़वकबद्ध शैली का प्रयोग

यह प्रेम लौकिक प्रेम है यहाँ ~~रा~~ रानीपन के स्थान पर नारीपन उभरा है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास के भ्रमरगीतसार (सं. - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल) से उद्धृत हैं।

यहाँ गोपियाँ उद्धव के सामने प्रकृति के उदाहरणों द्वारा अपनी विरह-व्यथा का वर्णन कर रही हैं।

व्याख्या :- गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण बिना ये लताएँ हैं वे भी रात्रि समान प्रतीत होती हैं। यह अब अग्नि पुंज की तरह लग रही हैं पहले शीतल लगती थी। कमलों का खिलना, यमुना का बहना, पक्षियों का बोलना व भ्रमरों का गुंजार सब व्यर्थ हो
यह सूर्य की किरणें भी अब जलाती हैं तथा श्रीकृष्ण के दर्शन ही अब संजीवनी का काम कर सकती हैं। गोपियाँ, सूर के शब्दों में उद्धव से आग्रह करते हुए कहती हैं कि उनकी आँखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राह जोते हुए आँखे तरस रही हैं।

विशेष :- 1) विप्रलंभ अलंकार का प्रयोग

2) प्रकृति उद्दीपन विभाव के रूप में

3) सूर ने अपने छंदों को लीलापद कहा।

4) ब्रजभाषा का अपनी शैशवास्था में यह रूप प्रशंसनीय है।

5) जायसी ने नागमती वियोग में -

"बरसे मेघा झकोर झकोरी
मोरे दुई नैन चुवै जस ओरी"

9/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझैं लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत पद्यांश लोकनायक तुलसीदास ~~की~~ के 'कवितावली' से उद्धृत है।

यहाँ तुलसीदास जी जाति प्रथा का विरोध करते हुए कलियुग वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या:- रामभक्त तुलसी ~~के लिए~~ जाति व्यवस्था की आलोचना करते हुए कह रहे हैं कि उन्हें किसी की जाति-पाति नहीं चाहिए। वह किसी के बुरे काम नहीं आने वाले। ना ही कोई उनके काम का है। रघुपति राम ही सबके मालिक हैं। तुलसी को बस उनके नाम का ही आसरा है। अतः तुलसी को साधु-असाधु से नहीं पड़ना। साहु के गोत्र को वे गुलाम का गोत्र बता रहे हैं। अतः तुलसी कह रहे हैं ये सारे संशय छोड़कर राम की भक्ति में मन लगाना चाहिए। किसी और के द्वार पर पड़ने का कोई औचित्य नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- 1) कवित्त छंद का प्रयोग है जो एक वार्णिक छंद है।
2) ब्रजभाषा में भी तुलसी समान अधिकार से लिखते हैं।
3) मुक्तक रचना का अंश
4) कबीर भी यही भाव प्रकट करते हैं:-
"हरि को भजे सो हरि को होय".

जाति व्यवस्था की जंजीरे आज भी जकड़ी हुई हैं। जरूरत है इसे बदलकर समतामूलक समाज के निर्माण की।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद के प्रेममूलक, साधनामूलक एवं अभिव्यक्तिमूलक रूप पर प्रकाश डालिये। 20

अनभै साँचा के कवि रचनाकार कबीर संत काव्यधारा के प्रतिनिधि ~~हस्ताक्षर~~ हस्ताक्षर हैं। कबीर ने रहस्यवाद का प्रयोग किया जो उनके असीम से मिलने के अनुभव पर आधारित था।

हिन्दी में रहस्यवाद का कारण आध्यात्मिक अनुभूति अथवा रचनाकार द्वारा जानबूझकर विषय को अमूर्त रखने के कारण आता है। कबीर का रहस्यवाद प्रथम अवस्था में साधनामूलक तथा द्वितीय अवस्था में भावमूलक अर्थात् भावनात्मक रहस्यवाद है। इसके विपरीत जायसी में पहले भावनात्मक तथा बाद में साधनात्मक रहस्यवाद है।

कबीर अद्वैत दर्शन के निर्गुण ब्रह्म में विश्वास करते थे इसलिए जगत को मिथ्या मानते हैं -

"दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना
राम नाम का मरम है आना।"

प्रेममूलक रहस्यवाद विरह के रूप में कबीर में दिखता है। कबीर अपने असीम से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मिलने को आतुर हैं तथा उससे उत्पन्न विरह को प्रेममूलक रहस्यवाद से प्रकट किया है।

साधनात्मक रहस्यवाद में साधना से गुजरना पड़ता है। यहाँ कबीर योग साधना की ओर संकेत करते हैं। यह नाथ सम्प्रदाय के हठयोग से कबीर ने ग्रहण किया है। इसका उदाहरण-

"जीभड़ियाँ छाला पड़्या
राम पुकारि पुकारि"

गुरु की महिमा की असीम से मिलन के लिए महत्वपूर्ण है। यह दृष्टि 'गुरुदेव को अंग' में संकलित दोहों में दिखाई देती है।

साधना की अंतिम अवस्था में प्रेममग्न कबीर को चारों तरफ असीम ~~का~~ दिखाई देता है -

"लाली मेरे लाल की,
जित देखूँ तित लाल।
लाली मैं देखन गई,
मैं भी हो गई लाल।"

इसी प्रकार ~~से~~ उनका अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद शरीर को आवरण समझता है तथा आत्मा को ब्रह्म। इस विचार को कबीर

अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद को, ~~[illegible]~~ उल्लिखित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ने इन पंक्तियों में व्यक्त किया है -

'जल में कुंभ, कुंभ में जल, फूटा कुंभ
जल जलहिं समाना

इस प्रकार जल बाहर व भीतर समान प्रकृति में है इससे पृथक नहीं किया जा सकता। इस तरह कबीर के रहस्यवाद में सारे तत्व उपस्थित हैं। यह आध्यात्मिक रहस्यवाद है जो ईश्वर की प्राप्ति के समय उत्पन्न हुआ है इसकी अभिव्यंजना सीधे अर्थों में करना संभव नहीं है इसलिए रहस्यवाद का सहारा लिया गया है।

आचार्य शुक्ल ने कबीर के रहस्यवाद की पहचान नहीं की। आचार्य द्विवेदी ने सही मायनों में पूर्वाग्रह रहित कबीर को सर्वश्रेष्ठ कवियों में माना तथा रहस्यवाद की तारीफ की

10/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरदास की साहित्यिक निपुणता पर विचार कीजिये।

सूरदास वात्सल्य के पितामह हैं तथा कृष्ण काव्यधारा के प्रतिनिधि। उनकी साहित्यिक निपुणा सर्वविदित है।

वात्सल्य के वर्णन में जितनी ऊर्जा सूर ने लगाई है उतनी संभवतः किसी ने नहीं। इसलिए कहा जाता है कि उनको माँ का हृदय मिला होगा। यह वात्सल्य वर्णन सहज, व्यावहारिक तथा आमजन के अनुभवों पर आधारित था-

'सुत मुख देख जसोदा फूली
हरसति देखि दुध की दतियाँ'

इस साहित्यिक निपुणता को शुक्लजी ने पहचाना तथा उनकी वचन-वक्रता, विरुद-विदग्धा की प्रशंसा की। उनकी अलंकृत भाषा ने ब्रज भाषा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। ब्रज भाषा ने अपने शैशव काल में सूर जैसा कवि पाकर पूर्णता प्राप्त कर ली। यहाँ संगीतात्मकता व लयात्मकता दृष्टिगत्य है।

सूर की भावप्रेरित वक्रता इनके भ्रमरगीत में दिखाई देती है जहाँ गोपियाँ अपने तर्कों के द्वारा उद्धव के ज्ञान-दंभ को पराजित करती हैं-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

"अब अति पंगु भयो मन मेरो
- - - - भयो सगुण को चेरो"

सूरदास की साहित्यिक निपुणता राधा को एक अनुरागमयी बालिका, प्रेममयी किशोरी, रसमयी कामिनी तथा विरहिणी स्वकीया रूप में दिखाने में भी है। राधा यौवन में जितनी चंचल है उसमें बाद में उतना ही गाम्भीर्य भी है। वह उद्धव-गोपी संवाद से दूर रहती है तथा उसकी अवस्था इन शब्दों में व्यक्त होती है-

"अति मलीन वृषभानु दुलारी"

विप्रलंभ शृंगार के वर्णन में सूरदास पर आचार्य शुक्ल ने अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन का आरोप व अलंकारों का अत्यधिक प्रयोग करने का आरोप लगाया है।

बिंबात्मक वर्णन में सूर के समक्ष कोई नहीं ठहरता। स्मृति बिंब, ध्वनि बिंब, संश्लेषणात्मक बिंब यहाँ बहुलता से मिलते हैं-

'ऊधो कोकिल कूजत कानन'

इस प्रकार सूर साहित्यिक निपुणता की सिद्धावस्था में पहुँचे हुए रचनाकार थे जिन्होंने हृदय की आँखों से कृष्ण भक्ति की धारा बहाई।

9/13 GM

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कबीर संतकाव्य धारा तथा तुलसी राम काव्यधारा के प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। दोनों ने समाज के सुधार, लोक जागरण व लोककल्याण के लिए साहित्य रचना की।

धार्मिक पाखंडों, जातिव्यवस्था, सामाजिक कुरीतियों का विरोध दोनों जगह मिलता है कबीर इनका विरोध खुलकर करते हैं -

'पाहन पूजै हरि मिले तो
मैं पूजूँ पहाड़'

तुलसी इनका विरोध तो करते हैं परंतु वे वर्ण व्यवस्था में आदर्श स्थापित करना चाहते हैं। नारी-दृष्टि भी तुलसी की उदार नहीं मानी गयी है, कबीर ने भी नारी-मुक्ति पर खुलकर विचार व्यक्त नहीं किये। परंतु तुलसी के यहाँ नारी स्वतंत्रता कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होती है -

"कत विधि सृजी नारी जग माहीं
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"

ईश्वर पर कबीर ने सगुण के स्थान

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्गुण को अपनाया। परंतु निर्गुण ब्रह्म आमजीवन में ग्राह्य नहीं है, इसके लिए रहस्यवाद का सहारा लेना पड़ा। यह इन्हें जनता से दूर करता है।

वहीं तुलसीदास जी ने सगुण भक्ति की। 'रामचरितमानस' ने अखिल भारतीय स्तर पर लोकप्रियता बनाई। राम लोकरक्षक के रूप में आँगन में पहुँचे। इससे तुलसी के राम मर्यादापुरुषोत्तम कहलाये। यह तुलसी का प्रभाव था कि राम सबके देवता बन गये। इस भक्ति ने लोकनायक के रूप में तुलसी को स्थापित किया।

कबीर ने 'कबीरदेशवा' की परिकल्पना दी। वहीं तुलसी ने 'रामराज्य' की। इस प्रकार दोनों ही विद्वेष समाज में समरसता लाना तथा समाज की समस्या का समाधान ढूँढना रहा हो अतः दोनों ही लोकनायक बन सकते हैं। परंतु किसी एक का चुनाव करना हो तो तुलसीदास ही लोकग्राह्य रामकाव्य व विविधता, विस्तार के कारण उन्हें लोकनायक माना जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' अज्ञेय की एक लंबी कविता है जिसका आधार एक जापानी मिथक है। इसमें अज्ञेय का दर्शन परिलक्षित हुआ है।

'असाध्यवीणा' में सृजन की प्रक्रिया, साधक की प्रकृति, सृजन की अनुभूति का वर्णन किया गया है। यह रचना अज्ञेय के माध्यमिक शून्यवाद दर्शन को भी प्रदर्शित करती है।

माध्यमिक शून्यवाद के अनुसार ब्रह्म की प्रकृति शून्य है तथा इसकी प्राप्ति मौन साधना के द्वारा संभव है। इसके लिए अहं का विसर्जन आवश्यक है। प्रियवंद इसी साधना का साधक है-

"मौन प्रियवंद वीणा को साध रहा था
नहीं वह स्वयं अपने को शोध रहा था"

माध्यमिक शून्यवाद के अतिरिक्त यहाँ पर योगाचार विज्ञानवाद दर्शन भी दिखाई देता है। यह दर्शन साधना का माध्यम योग को बताता है। इसका प्रतीक प्रियवंद के वर्णन में है। उसे गुफागेह व

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'केशकम्बली' जैसे विशेषण दिये गये हैं।

अज्ञेय पर अस्तित्ववाद का प्रभाव भी नजर आता है। अस्तित्ववाद सार्त्र, कीर्केगार्द, काम् द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत है। इस सिद्धांत में मनुष्य को केन्द्र में रखा गया है। यहाँ प्रियवंद साधना कर रहा है। यह साधना सर्वकल्याण हेतु होने पर भी वैयक्तिक है।

इस वैयक्तिक साधना का असर भी सभी पर अलग-अलग प्रभाव करता है। इसका अर्थ है व्यष्टि का समष्टि में मिलन। परंतु इसकी ओर ध्यान आवश्यक है। यह विचार अज्ञेय की अन्य रचनाओं में भी दृष्टिगोचर है-

"यह द्वीप अकेला
गर्व भरा मदमाता पर
इसे भी पंक्ति को दे दो।।

अज्ञेय ने 'असाध्यवीणा' में प्रकृति को भी साधना में सम्मिलित किया है। यहाँ पर प्रियवंद किरीट तरु को ध्यान करता है, अतीत का स्मरण तथा अंत में अपनी साधना समर्पित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर देता है –

"शेष नहीं कुछ मेरा
मैं तो स्वयं डूब गया था शून्य में"

इस प्रकार अज्ञेय की रचनाएँ दर्शन, जीवन की राहों का अन्वेषण करती हैं। अज्ञेय ने एक मिश्रक को अपनी कल्पनाशीलता, सृजनशीलता व सजग शिल्प से बहुआयामी बना दिया है।

यह रचना आज के युग में कामायनी की भाँति साधक को इच्छा, क्रिया, ज्ञान में समन्वय का संदेश देती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

'राम की शक्ति पूजा' महाप्राण निराला की प्रसिद्ध रचना है। यहाँ पर 'शक्ति की मौलिक' कल्पना की गई है। इसकी द्वन्द्व योजना, नाटकीयता इसके संदेश, उद्देश्य को सघन बनाती है।

'राग-विराग' के कवि निराला ने राम के चरित्र में द्वन्द्व दिखाया है। एक क्षण उनको पराजय का भय है दूसरी तरफ वह अदम्य साहस दिखाते हैं –

'मित्रवर विजय होगी न समर में'
→ पराजय

'वह एक ओर मन था राम का, जो न थका
वह नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय"
→ उत्साह, जिजीविषा का प्रतीक

यही द्वन्द्व हार-जीत, सुख-दुःख में शाश्वत सत्य के रूप में है। द्वन्द्व प्रतीकात्मक स्तर पर राम के प्रतीक रूप में गाँधीजी के अन्दर भी है। यहाँ पर द्वन्द्व है राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता को लेकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यहाँ द्वन्द्व निराला के व्यक्तिगत जीवन को लेकर भी उभारा गया है। निराला कहते हैं-

'धिक ! जीवन को जो पाता ही आया विरोध"

यही विरोध निराला सरोज-स्मृति में भी व्यक्त करते हैं। जहाँ पर वे अपनी पुत्री के हित कुछ कुछ नहीं कर पाने के कारण पराजय-बोध से ग्रस्त हैं।

घटना के स्तर पर भी द्वन्द्व 'राम की शक्ति पूजा' में है। घटना के स्तर पर निराला राम के सामने लौटता शत्रु दल, साधना के दौरान फूल चोरी होना तथा नेत्र निकालने की तैयारी में भी दिखाई देता है।

यह कथानक द्वन्द्वों के द्वारा शक्ति की मौलिक कल्पना का संदेश देता है। इसे निर्मला जैन ने शक्ति का प्रतिमान काव्य कहा। द्वन्द्व योजना इसकी शक्ति और घनीभूत करती है।

8

7½/15

और बेहतर बनाएं। मॉडल उत्तर देखें।

27

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पद्मावत' 'प्रेम की पीर' के कवि मलिक मुहम्मद जायसी का प्रेमाख्यान प्रबंधकाव्य ~~महाकाव्य~~ है। अपनी विरह-विदग्ध पत्नी को छोड़कर रत्नसेन द्वितीय विवाह करता है। इसका वर्णन जायसी ने किया है।

अन्योक्ति का अर्थ है जब रचना में अन्य अर्थ अभिधार्थ की तुलना में प्रधान हो। समासोक्ति में अन्य अर्थ की उपस्थिति होती है परंतु प्रधानता ~~के~~ अभिधार्थ की होती है। अतः पद्मावत में यह प्रश्न संश्लिष्ट है क्योंकि आलोचकों इसे लेकर विवाद है।

इसे अन्योक्ति मानने वाले आध्यात्मिक पाठक हो सकते हैं क्योंकि इसका प्रतीकार्थ इसकी ओर संकेत करता है। जो सामान्य अर्थ ग्रहण करेगा वह इसे समासोक्ति मानेगा।

~~इसे~~ पद्मावत को अन्योक्ति नहीं माना जा सकता क्योंकि-

1) इसके प्रथम भाग में ही आध्यात्मिक अर्थ, रहस्यवाद है।

2) यह प्रतीकार्थ है ~~के~~ वह पूरी तरह नहीं बस

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कुछ दर्शन दृश्य हैं।

3) बिना दूसरे अर्थ के भी रसास्वादन किया जा सकता है।

अतः अब प्रश्न उठता है कि क्या इसे समासोक्ति माना जाए। इसके लिए कुछ आलोचकों का तर्क है कि जायसी उद्देश्य लौकिक प्रेम है- "मानुष प्रेम भएउ बैकुंठी"। अंत में संदेश भी वह यही देना चाहते हैं। इसलिए इसका अन्यार्थ सिर्फ मुहावरे के रूप में उपस्थित है। इसलिए इसे एकार्थ प्रकृत काव्य की श्रेणी में रखा जाना चाहिए।

इस प्रकार 'पद्मावत' अन्योक्ति नहीं हो सकें समासोक्ति का भी समुचित निर्वहन नहीं है परंतु किसी एक में से चुनाव करना होतो इसे समासोक्ति कहा जाना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

~~संदर्भ~~ प्रसंग :- यह प्रसंग एक मुक्त मन के मनुष्य की भावनाओं का वर्णन करता है।

व्याख्या :- यहाँ पर जीवन में हार जीत सिर्फ परिणाम से तय नहीं होती यह भाव दर्शाया गया है। यहाँ हारकर भी विजय का उल्लास तलाशा जा रहा है। उसके छिन्न-भिन्न अस्त्र उसकी जीत के ही संकेत हैं। इससे उसका सीना चौड़ा हो रहा है तथा मुख पर एक तेज आ गया है।

विशेष :-

1) प्रश्नवाचक शैली
2) 'मैं' शैली में वर्णन
3) विराम चिह्नों का सुंदर प्रयोग

जीवन-संग्राम में हार-जीत शाश्वत सत्य है। यही बात यहाँ पर आशावादी विचार के रूप में है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यांश फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से उद्धृत है। पद्यांश पर डॉ. प्रशांत मेरीगंज में विद्यापति के गीत पाकर उसका वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या:- दिनकर जी अपनी कविता में प्रश्नवाचक शैली में पूछते हैं कि विद्यापति गीत कहाँ गायब हो गये। इन्हीं गीतों को डॉ. प्रशांत मेरीगंज की झोपड़ियों में पाते हैं। यहाँ गरीबी, जहालत में जीने वाले लोग अपनी झोपड़ियों में इन्हीं गीतों से सुकून पाते हैं यही उनकी जिन्दगी के मधुर पल हैं।

विशेष:- 1) आँचलिक उपन्यास की पंक्तियाँ, एक अँचल विशेष का वर्णन कर रही हैं।
2) वर्णनात्मक शैली में रोचक तरीके से प्रसंग लिखा गया है।
3) अभिधात्मक भाषा का प्रयोग

यह पंक्तियाँ लोक-संस्कृति, लोकभाषा,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोक समस्याओं से परिचित करा रही हैं।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ युगांतकारी नाटककार, इतिहासकार, चिंतक जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत है।

यहाँ युद्ध की महत्ता का वर्णन देवसेना, विजया के समक्ष किया जा रहा है।

व्याख्या :- प्रसाद जी अपनी तत्समी काव्य से पूछते हैं कि युद्ध एक गान से कम नहीं। वह रुद्र शिव के ताण्डव की भाँति नाद-सौंदर्य से युक्त है। भैरव-संगीत का निर्माण इसी तरह होता है। विध्वंसकारी प्रकृति उसी का परिणाम, वह प्रकृति का नियम व सच्चर है।

विशेष :-
1) सूत्रमूलक शैली व प्रश्नवाचक शैली - "युद्ध क्या गान नहीं है"।
2) भाषा - तत्सम प्रधान संस्कृतनिष्ठ
3) भाषा में लयात्मकता व ऐतिहासिक आवरण

युद्ध की शाश्वत समस्या साहित्य का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। 'अंधायुग' में धर्मवीर भारती तथा 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर भी युद्ध-चेतना पर ही विचार करते हैं।

5/10

प्रश्न के दृष्टिकोण को भी चर्चा करें मॉडल उत्तर देखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~संदर्भ-प्रसंग:- आधुनिक लेखक मन्नू भण्डारी के प्रबोध रूप में लिखित राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' का यह अंश है~~

~~यहाँ राजनीति की प्रकृति पर वर्णन किया गया है~~

~~व्याख्या:-~~ राजनी

संदर्भ प्रसंग:- प्रस्तुत ~~प्रसंग~~ गद्यांश मोहन राकेश के नाटक- 'आषाढ़ का एक दिन' से अवतरित है यह गद्यांश प्रियंगुमंजरी द्वारा मल्लिका को कहा गया है

व्याख्या:- प्रियंगु राजनीति पर विचार व्यक्त करते हुए कहती है कि ~~कुछ~~ साहित्य की यहाँ समय की अधिकता नहीं होती। यहाँ अनावश्यक समय नहीं होता।

जब कालिदास को कश्मीर का राजा बनाया जाता है उसका राजकाज संभालना आवश्यक है राजनीति में यह सजगता आवश्यक है अन्यथा सब कुछ चौपट हो सकता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष:-

1) भाषा तत्सम प्रधान किंतु सहज व पारदर्शी।

2) सूक्तिमूलक, सूत्र शैली का प्रयोग

3) भाषा में कसावट, एक शब्द भी व्यर्थ नहीं। राजनीति के गूढ़ चिंतन को कम शब्दों में व्यंजित किया गया।

यह शब्द राजनीति के लिए हमेशा प्रासंगिक है सत्ता का मोह सृजन का विरोधी है

5/10

और बेहतर बनाने मॉडल उत्तर देखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग:- यह गद्यांश कमलेश्वर की नई कहानी - "खोई हुई दिशाएँ" से उद्धृत है। यह राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित है।

यहाँ पर प्रमुख पात्र चन्दर सड़क पर गोलगप्पे खाते हुए एक स्त्री को देख रहा है।

व्याख्या:-
बच्चे में उसे प्राकृतिकता दिखती है परंतु उसकी माँ में उसे बनावटीपन दिखता है। उसे पहचान का संकट है। वह ऐसे ही घूमता रहता है दिल्ली में परंतु स्वयं को पहचान नहीं पा रहा। यही संकट उसे औरों में भी दिखाई दे रहा है।

विशेष
1) कथानक में कोई घटना नहीं, नई कहानी के अनुरूप
2) अभिधात्मक भाषा का प्रयोग
3) लेखन शैली, शब्द चुनाव वातावरण के अनुकूल

5/10

गहराई लाएँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश नव नाट्यलेखन के सफलतम रचनाकार हैं। आपने आधुनिक हिन्दी नाटक की दशा व दिशा दोनों बदल दी रंगमंच की दृष्टि इनका योगदान अप्रितम है।

मोहन राकेश ने कहा था कि भारतीय रंगमंच को हिन्दी भाषी प्रदेश की आकांक्षाओं के अनुरूप मौलिक स्वरूप बनाना पड़ेगा। यह मौलिक रंगमंच उन्होंने अपने नाटकों के द्वारा प्रदत्त करने की कोशिश की।

उनके नाटक कथानक, घटना, संवाद, चरित्र, दृश्य योजना, वातावरण व अभिनेयता के सारे नाटकीय प्रतिमानों पर खरे उतरते हैं।

'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक आवरण लेते हुए भी एक स्वतंत्र कथानक व स्वतंत्र चरित्र-योजना का निर्माण करता है। यह नाटक आधुनिक संदर्भों में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सत्ता - सृजन का संघर्ष तथा भावना - यथार्थ का वर्णन करता है। अतः कथानक आधुनिक रंगमंच के अनुकूल है।

इसमें तीन अंक हैं परंतु एक ही दृश्य में सारे अंक हैं। दृश्य निर्माण हेतु सारे रंग निर्देश भी मोहन राकेश ने दिये हैं। दृश्य भी साधारण है। इसमें दीपों की संख्या घटाना, प्रकाश का प्रयोग, टूटी -फूटी गृहस्थी की वस्तुएँ सभी सर्वसुलभ रंगमंचीय उपकरण हैं। घटनाओं की विरलता है।

संवाद शैली अकृत्य है। भाषा प्रायः तत्समी है जो ऐतिहासिक आवरण के अनुकूल है। कहीं कहीं लोक-भाषा, तद्भव शब्द व्यावहारिकता प्रदान करते हैं जैसे- 'दुध औंटा दिया है।'। संवाद की दृष्टि से ~~मल्लिका~~ विलोम - कालिदास संवाद, प्रियंगुमंजरी - मल्लिका संवाद, मल्लिका - अंबिका संवाद काफी प्रभावशाली हैं। बीच में अनुस्वार - अनुनासिक प्रसंग सर्वव्यापी तनाव को दूर करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

प्रायः राकेश के नारी पात्र सजग व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निर्णय लेने में समर्थ होते हैं। यहाँ पर भी कालिदास का नायकत्व खण्डित है जो आधुनिक संदर्भों के अनुकूल है।

इस प्रकार यह नाटक हर प्रतिमान पर खरा उतरता है। इसका मंच देश-विदेश में सैकड़ों बार हो चुका है। अभिनेयता की दृष्टि से राकेश ने एक मौलिक परिदृश्य प्रस्तुत किया है। भाषा काव्यात्मक है, विराम चिह्नों का प्रयोग संवादों को प्रभावी बनाता है। एकालाप वाले अंतिम संवाद नाटक को थोड़ा कमजोर करते हैं। परंतु राकेश ने अपने उद्देश्य सफलता पायी है।

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फणीश्वरनाथ रेणु' ने 'मैला-आँचल' के माध्यम से आँचलिक उपन्यास का धरातल विस्तृत कर दिया। इसकी विशिष्ट भाषा शैली ने इसे सफलतम आँचलिक उपन्यासों में स्थान दिलाया है।

आँचलिक उपन्यास होने के कारण भाषा शैली में आँचलिक शब्द अधिक हैं। इनका प्रयोग उपन्यास को रोचक बनाता है। कुछ शब्द - मनसाघर (स्नानागार), चुमौना, बुतरु, टनमना जाना इत्यादि। ये शब्द रोचकता पैदा करते हैं।

यहाँ भाषा शैली भी विभिन्न टोलियों की पहचान है। संथाल टोली से कुत्तों की आवाज - भौं-भौं-भौं... तथा मेढ़कों की आवाज - टर्र-..टर्र..टर्र। यह भाषिक शैली लिखित दुनिया से मौखिक शैली की तरफ ले जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी तरह लोकभाषा के मुहावरे तथा कहावतें ~~यहाँ~~ संवादों को जान देते हैं। यहाँ पर सूक्तिमूलक शैली भी जनभाषा में ही उजागर होती है। लोकभाषा का उदाहरण - "जब तहसीलदारजी की बेटी गमकउआ साबुन से नहाती है तो सारा ग्राम गमगम करने लगा जाता है"

यहाँ पर भाषा शैली पात्रानुकूल है। डॉ. प्रशांत हिन्दी बोलते हैं, बालदेवजी की भाषा अलग है तथा पुलिसवाले की भाषा अलग -

" वद्च -- साला झूठ बोलता है हमसे"

इस प्रकार भाषा शैली 'मैला आँचल' की आँचलिकता को विस्तार प्रदान करती है। इसे विशिष्ट बनाती है। भाषा में काव्यात्मकता का उदाहरण बूढ़ी काकी के वर्णन में - "सफेद बालों की लट, होंठों की लालिमा बरकरार ... ~~जवा~~ जवानी की सुंदरता आग लगाती है -- बुढ़ापे की सुंदरता ~~सनेह~~ स्नेह बरसाती है॥

इस प्रकार भाषा ~~व~~ शैली उत्कृष्ट है।

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी उपन्यासकार यशपाल ने 'दिव्या' उपन्यास से नारी उद्धार तथा अन्य सामाजिक समस्याओं को स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर उठाया।

यहाँ पर मार्क्सवादी विचारधारा स्थूल स्तर पर नहीं है, इसलिए बाधा नहीं बनती। यशपाल प्राक्कथन में कहते हैं – 'समस्त सृष्टि मनुष्य की क्रीड़ा है' अर्थात् मनुष्य ही अपना निर्माता है। यह विचारधारा। बंधनों को तोड़कर नवीन राहों का अन्वेषण करने को प्रेरित करती है।

दिव्या : दारा, अंशुमाला तथा अंत में फिर से दिव्या बनती है। इन अवस्थाओं में नारी के ऊपर विभिन्न बंधनों को दिखाया गया है। दास व्यवस्था, जाति व्यवस्था तथा नारी का उद्देश्य दर्शाया गया है।

पृथुसेन जातिव्यवस्था का शिकार होकर 'जन्म के अपराध' का सामना करता है। न्याय को सत्ता के अधीन बताकर वर्तमान की समस्या

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यशपाल ने प्रकट की है

दिव्य दिव्या को मारिश कहता है नारी जीवन का उद्देश्य सृष्टि है वह सृष्टि की निर्माता है इसलिए अंत में दिव्या मारिश को स्वीकार करके वेश्यावृत्ति त्याग देती है दिव्या रुद्रधीर से कहती है - 'कुलदेवी का सम्मान पराक्रमी पुरुष का सम्मान है नारी का सम्मान नहीं।'

दिव्या का व्यक्तित्वांतरण तथा अंत में सारे बंधनों से मुक्ति पाकर नारी-पुरुष का परस्पर प्रणय दिखा दिखाकर यशपाल ने आधुनिक समस्याएँ दिखाई हैं।

दिव्या का आज भी महत्व है। देश आर्थिक, भौतिक प्रगति कर रहा है परंतु इसमें नारी, दलित, पिछड़े वर्ग पीछे छूट जा रहे हैं। नारी-हिंसा आज भी समाज पर कलंक है इस प्रकार यह उपन्यास समाधान सुझाता है।

3½ है।

15

Copyright – Drishti The Vision Foundation